



**ONLYias**  
BY PHYSICS WALLAH

# BPSC WALLAH

## पिछले 15 वर्षों में पूछे गए प्रश्नों का संकलन (सामान्य अध्ययन)

- विस्तृत व्याख्या सहित वर्गीकृत प्रश्न पत्र ।
- विषयवार वर्गीकरण ।
- BPSC पाठ्यक्रम का संक्षिप्त संस्करण ।

**BPSC प्रीलिम्स परीक्षा हेतु व्यापक पुनरीक्षण श्रृंखला ।**

## बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा के लिए प्रश्न चार्ट

| विषय                                          | आधुनिक इतिहास | प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास | भूगोल एवं पर्यावरण | राजनीति विज्ञान | अर्थशास्त्र | विज्ञान | बिहार विशेष |
|-----------------------------------------------|---------------|------------------------------|--------------------|-----------------|-------------|---------|-------------|
| बीपीएससी परीक्षा                              |               |                              |                    |                 |             |         |             |
| 70वीं (पुनःपरीक्षा) बीपीएससी                  | 23            | 12                           | 24                 | 15              | 10          | 28      | 15          |
| 70वीं बीपीएससी                                | 19            | 9                            | 12                 | 10              | 11          | 27      | 15          |
| 69वीं बीपीएससी                                | 12            | 13                           | 19                 | 18              | 18          | 31      | 19          |
| 68वीं बीपीएससी                                | 15            | 8                            | 12                 | 8               | 11          | 30      | 33          |
| 67वीं (पुनःपरीक्षा) बीपीएससी                  | 15            | 7                            | 15                 | 10              | 11          | 30      | 30          |
| 67वीं (रद्द परीक्षा)<br>बीपीएससी परीक्षा रद्द | 15            | 7                            | 15                 | 17              | 5           | 30      | 29          |
| 66वीं (पुनःपरीक्षा) बीपीएससी                  | 16            | 8                            | 18                 | 11              | 10          | 30      | 26          |
| 66वीं बीपीएससी                                | 18            | 8                            | 12                 | 6               | 9           | 30      | 26          |
| 65वीं बीपीएससी                                | 17            | 8                            | 10                 | 9               | 9           | 30      | 29          |
| 64वीं बीपीएससी                                | 15            | 8                            | 10                 | 11              | 10          | 20      | 24          |
| 63वीं बीपीएससी                                | 16            | 11                           | 13                 | 12              | 11          | 20      | 18          |
| 60वीं-62वीं बीपीएससी                          | 18            | 8                            | 13                 | 10              | 9           | 20      | 18          |
| 56वीं-59वीं बीपीएससी                          | 19            | 9                            | 13                 | 2               | 26          | 20      | 10          |
| 53वीं-55वीं बीपीएससी                          | 17            | 11                           | 10                 | 11              | 11          | 17      | 20          |
| 48वीं-52वीं बीपीएससी                          | 18            | 6                            | 10                 | 14              | 11          | 4       | 24          |

# विषय-सूची

## खंड-I: प्राचीन और मध्यकालीन

इतिहास..... 1-46

### 1. प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास ..... 3

- 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (पुनःपरीक्षा), 2025 ..... 3
- 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024 ..... 7
- 69वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024 ..... 10
- 68वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2023 ..... 13
- 67वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (पुनःपरीक्षा), 2022 ..... 16
- 67वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (रद्द) परीक्षा, 2022 ..... 19
- 66वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (पुनःपरीक्षा), 2021 ..... 21
- 66वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2020 ..... 24
- 65वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2019 ..... 28
- 64वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2018 ..... 30
- 63वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2018 ..... 32
- 60वीं-62वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2017..... 35
- 56वीं-59वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2015..... 38
- 53वीं-55वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2011..... 42
- 48वीं-52वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2008..... 45

## खंड-II: आधुनिक इतिहास.....47-128

### 2. आधुनिक इतिहास ..... 49

- 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (पुनःपरीक्षा), 2025 ..... 49
- 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024 ..... 56

- 69वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024 ..... 62
- 68वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2023 ..... 67
- 67वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (पुनःपरीक्षा), 2022 ..... 74
- 67वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (रद्द) परीक्षा, 2022 ..... 79
- 66वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (पुनःपरीक्षा), 2021 ..... 87
- 66वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2020 ..... 92
- 65वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2019 ..... 96
- 64वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2018 ..... 100
- 63वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2018 ..... 105
- 60वीं-62वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2017... 109
- 56वीं-59वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2015... 114
- 53वीं-55वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2011... 119
- 48वीं-52वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2008... 124

## खंड-III: भारतीय राजव्यवस्था.....129-191

### 3. भारतीय राजव्यवस्था ..... 131

- 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (पुनःपरीक्षा), 2025 ..... 131
- 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024 ..... 135
- 69वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024 ..... 139
- 68वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2023 ..... 144
- 67वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (पुनःपरीक्षा), 2022 ..... 148



- 67वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा  
(रद्द) परीक्षा, 2022 ..... 359
- 66वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा  
(पुनःपरीक्षा), 2021 ..... 372
- 66वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2020 ..... 386
- 65वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2019 ..... 398
- 64वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2018 ..... 409
- 63वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2018 ..... 418
- 60वीं-62वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2017... 425
- 56वीं-59वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2015... 435
- 53वीं-55वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2011... 442
- 48वीं-52वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2008... 448

## खंड-VII: बिहार विशेष.....451-544

### 7. बिहार विशेष..... 453

- 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा  
(पुनःपरीक्षा), 2025 ..... 453
- 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024 ..... 458
- 69वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024 ..... 462

- 68वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2023 ..... 469
- 67वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा  
(पुनःपरीक्षा), 2022 ..... 479
- 67वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा  
(रद्द) परीक्षा, 2022 ..... 488
- 66वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा  
(पुनःपरीक्षा), 2021 ..... 495
- 66वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2020 ..... 502
- 65वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2019 ..... 510
- 64वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2018 ..... 517
- 63वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2018 ..... 524
- 60वीं-62वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2017 .... 529
- 56वीं-59वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2015... 533
- 53वीं-55वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2011... 536
- 48वीं-52वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2008... 540

## 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा (पुनःपरीक्षा), 2025

1. दिल्ली सल्तनत के दौरान, पदनाम मुकद्दम या चौधरी का इस्तेमाल किसके लिए किया जाता था ?  
(a) गांव के मुखिया  
(b) गांव के लेखाकार  
(c) राजस्व अधिकारी  
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (a)

**व्याख्या:**

- दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था में, ग्रामीण क्षेत्रों को एक संरचित ग्राम प्रणाली के माध्यम से प्रबंधित किया जाता था।
- 'मुकद्दम' या 'चौधरी' शब्द का अर्थ गांव के स्थानीय मुखिया से था, जो कानून और व्यवस्था बनाए रखने, कर संग्रह सुनिश्चित करने और राज्य के अधिकारियों के समक्ष गांव का प्रतिनिधित्व करने के लिए जिम्मेदार था।
- हालाँकि वे कभी-कभी राजस्व एकत्र करते थे, लेकिन उनकी प्राथमिक पहचान एक गांव के नेता या प्रतिनिधि की थी, न कि एक पेशेवर लेखाकार या राजस्व अधिकारी की।
- ये व्यक्ति अक्सर एक सम्मानित सामाजिक पद रखते थे और राज्य और ग्रामीणों के बीच मध्यस्थता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

2. "जिल्ले इलाही" शब्द का पहली बार प्रयोग किसके द्वारा किया गया था?

- (a) अलाउद्दीन खिलजी      (b) अकबर  
(c) बलबन      (d) इल्तुतमिश

उत्तर: (c)

**व्याख्या:**

**बलबन का शासनकाल:**

- बलबन दिल्ली सल्तनत, विशेष रूप से इसके शासन और संस्थाओं का एक प्रमुख वास्तुकार था।

- **राजशाही विचारधारा:**

- बलबन, जिसने 1266 से 1287 ई. तक सुल्तान के रूप में शासन किया, वह जिल्ल-ए-इलाही या "जिल्ले इलाही" की उपाधि का दावा करने वाला पहला व्यक्ति था, जिसने दावा किया कि वह पृथ्वी पर "ईश्वर की छाया" था।
- यह सुल्तान की स्थिति को बढ़ाने और राजत्व की दिव्य प्रकृति पर जोर देने की उसकी नीति का हिस्सा था, जिससे राजशाही के अधिकार और पवित्रता को मजबूत किया जा सके।
- उसने तुर्कान ए चहलगानी (40 रईसों का समूह) को भंग कर दिया।

- **दरबारी सुधार:**

- सख्त दरबारी अनुशासन और नए अनुष्ठान जैसे:  
• सिजदा (प्रणाम), और  
• पैबोस (सुल्तान के पैर चूमना), और
- एक शानदार दरबार रखा और नौरोज नामक फारसी त्योहार को लोकप्रिय बनाया।

3. "तारीख-ए-फिरोज शाही" किसके द्वारा लिखी गई थी?

- (a) शम्स सिराज अफीफ  
(b) याह्या सरहिंदी  
(c) मिनहाज उस सिराज  
(d) इसामी

उत्तर: (a)

**व्याख्या:**

- तारीख-ए-फिरोजशाही मोहम्मद बिन तुगलक और फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल के दौरान लिखी गई थी।
- यह कार्य दो भागों में विभाजित है:  
○ पहला भाग जियाउद्दीन बरनी द्वारा लिखा गया था, और  
○ दूसरा भाग शम्स-ए-सिराज अफीफ द्वारा लिखा गया था।  
○ दोनों मूल रूप से फारसी में हैं, जो 1357 ई. में पूरा हुआ था।

- यह मुख्य रूप से दिल्ली के सुल्तानों का इतिहास है, जो सुल्तान गयासुद्दीन बलबन के शासनकाल से शुरू होता है और फिरोज शाह तुगलक के शासन के छठे वर्ष में समाप्त होता है।
- इसमें बलबन के राजवंश, खिलजी और तुगलक शामिल हैं।

4. दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यता है:

- (a) सिंधु घाटी
- (b) चीनी
- (c) मिस्र
- (d) मेसोपोटामिया (इराक)

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- **मेसोपोटामिया सभ्यता**, जो वर्तमान इराक में टिगरिस और यूफ्रेट्स नदियों के बीच स्थित है, को व्यापक रूप से **सबसे पुरानी ज्ञात शहरी सभ्यता** माना जाता है, जो लगभग 3500 ईसा पूर्व उभरी थी।
- इसने सबसे पहले लेखन प्रणाली (क्यूनीफॉर्म) को जन्म दिया, सुमेर जैसे शहर-राज्य, और कानून, खगोल विज्ञान और वास्तुकला में उन्नति हुई।
- सिंधु घाटी सभ्यता लगभग 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक, मिस्र की सभ्यता 3150 ईसा पूर्व से 332 ईसा पूर्व तक और चीनी सभ्यता लगभग 2070 ईसा पूर्व से 1600 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में थी।
- जबकि सिंधु घाटी, मिस्र और चीनी जैसी अन्य प्राचीन संस्कृतियाँ भी जल्दी फली-फूलीं, पुरातात्विक अभिलेखों में मेसोपोटामिया उनसे पहले का है।



5. मौर्य साम्राज्य के संस्थापक कौन थे?

- (a) बिंदुसार
- (b) बृहद्रथ
- (c) अशोक
- (d) चंद्रगुप्त मौर्य

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- **चंद्रगुप्त मौर्य (लगभग 321 ईसा पूर्व)** प्राचीन भारत में **मौर्य साम्राज्य के संस्थापक** थे।
- अपने सलाहकार **चाणक्य (कौटिल्य)** के मार्गदर्शन में, उन्होंने नंद वंश को उखाड़ फेंका और मगध (वर्तमान बिहार) में एक मजबूत केंद्रीकृत साम्राज्य की स्थापना की।
- चंद्रगुप्त ने भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्से को एक केंद्रीकृत प्रशासन के तहत एकीकृत किया, उनका साम्राज्य पूर्वी सिंधु घाटी से बंगाल और मध्य तथा दक्षिणी भारत के कुछ हिस्सों तक फैला हुआ था।

मौर्य साम्राज्य के प्रमुख शासक:

- **चंद्रगुप्त मौर्य (लगभग 321-297 ईसा पूर्व)**: अपने मुख्यमंत्री चाणक्य (कौटिल्य) के मार्गदर्शन में मौर्य राजवंश की स्थापना की।
- **बिंदुसार (लगभग 297-273 ईसा पूर्व)**: चंद्रगुप्त के पुत्र; साम्राज्य का दक्षिण में विस्तार किया और हेलेनिस्टिक (यूनानी) राज्यों के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखे।
- **अशोक महान (लगभग 268-232 ईसा पूर्व)**: चंद्रगुप्त के पोते, साम्राज्य को उसके सबसे बड़े क्षेत्रीय विस्तार तक ले गए, कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध धर्म में परिवर्तित हो गए और भारत के भीतर और बाहर दोनों जगह अहिंसा और बौद्ध धर्म के प्रसार को बढ़ावा दिया।
- **बृहद्रथ**: अंतिम मौर्य शासक, बृहद्रथ की 185 ई.पू. में उनके सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा हत्या कर दी गई थी, जिससे राजवंश का अंत हो गया।
- 6. निम्नलिखित में से कौन प्राचीन भारत में बौद्ध शिक्षा के लिए प्रसिद्ध केंद्र नहीं है?
  - (a) नागपुर
  - (b) वल्लभी
  - (c) विक्रमशिला
  - (d) नालंदा

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- प्राचीन काल में **नागपुर को बौद्ध शिक्षा के केंद्र के रूप में नहीं जाना जाता था**। आधुनिक बौद्ध आंदोलनों में इसकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता है, लेकिन इसमें प्राचीन मठवासी या शैक्षणिक परंपरा का अभाव है।
- **वल्लभी** (वर्तमान गुजरात में) एक सम्मानित शिक्षण केंद्र था, खासकर मैत्रक शासकों के अधीन। यह बौद्ध धर्म से काफी प्रभावित था।



- पाल राजवंश के धर्मपाल द्वारा निर्मित **विक्रमशिला** (बिहार में) उन्नत बौद्ध अध्ययन का एक प्रमुख केंद्र था।
- बिहार में स्थित **नालंदा** अपने विशाल बौद्ध विश्वविद्यालय के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जो पूरे एशिया से विद्वानों को आकर्षित करता है।

7. अशोक के स्तंभों पर लिखी गई लिपि है:

- ब्राह्मी
- सुमेरी
- पाली
- संस्कृत

उत्तर: (a)

**व्याख्या:**

- **अशोक के स्तंभों पर शिलालेख ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं**, जो प्राचीन भारत में इस्तेमाल की जाने वाली सबसे प्रारंभिक लिपि थी।
- मौर्य सम्राट अशोक ने **शासन, नैतिकता और बौद्ध धर्म** के बारे में अपने शिलालेखों को संप्रेषित करने के लिए भारतीय उपमहाद्वीप में स्तंभों और चट्टानों पर इन शिलालेखों को खुदवाया था।
- हालाँकि अशोक के **कुछ शिलालेख पाली में लिखे गए हैं**, लेकिन शिलालेखों के लिए इस्तेमाल की जाने वाली **लिपि ब्राह्मी है**।
- बाद के शिलालेखों में **संस्कृत का भी उपयोग** किया गया था, लेकिन अशोक के समय में ब्राह्मी लिपि प्रमुख थी।

8. निम्नलिखित में से कौन चंद्रगुप्त मौर्य से संबंधित नहीं है?

- सुसीम
- सांची
- रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख
- विष्णुगुप्त

उत्तर: (b)

**व्याख्या:**

- **सांची मध्य प्रदेश में स्थित एक प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल है**, जो अपने बौद्ध स्तूपों, अखंड स्तंभों और सुंदर मूर्तियों के लिए जाना जाता है।
  - सांची का संबंध चंद्रगुप्त मौर्य के पोते सम्राट अशोक से है, लेकिन **इसका सीधा संबंध चंद्रगुप्त मौर्य से नहीं है**।

- बौद्ध धर्म अपनाने के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने के लिए सांची में स्तूपों और अन्य संरचनाओं के निर्माण में योगदान दिया।

- दूसरी ओर, चंद्रगुप्त मौर्य मुख्य रूप से मौर्य साम्राज्य की स्थापना और सत्ता के समेकन के लिए **चाणक्य के साथ उनके गठबंधन से जुड़े हैं**।

- **विष्णुगुप्त:** यह महान शिक्षक और दार्शनिक चाणक्य का दूसरा नाम है, जिन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य के उत्थान और मौर्य साम्राज्य की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

9. सिंधु घाटी सभ्यता के उस प्रमुख शहर का नाम बताइए जिसका पश्चिम एशिया के साथ व्यापार था।

- रोपड़
- लोथल
- कालीबंगन
- उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (b)

**व्याख्या:**

**लोथल:**

- भारत के वर्तमान **गुजरात में स्थित लोथल** सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का एक प्रमुख शहर था जो अपनी सुनियोजित गोदी बंदरगाह के लिए जाना जाता था, जो समुद्री व्यापार में इसकी भूमिका को दर्शाता है।
- **इसका पश्चिम एशिया के साथ व्यापारिक संबंध था**, जिसका प्रमाण मुहरों, मोतियों और अन्य कलाकृतियों की खोज से मिलता है जो मेसोपोटामिया और पश्चिम एशिया के अन्य क्षेत्रों की सभ्यताओं के साथ संबंधों का सुझाव देते हैं।

**रोपड़:**

- रोपड़ (या रूपनगर) एक महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल है, लेकिन यह विशेष रूप से पश्चिम एशिया के साथ अपने व्यापार के लिए नहीं जाना जाता है।
- इसकी प्रमुखता एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और औद्योगिक केंद्र के रूप में इसकी भूमिका से अधिक संबंधित है।

**कालीबंगन:**

- कालीबंगन राजस्थान में स्थित एक अन्य प्रमुख हड़प्पा स्थल है।
- यद्यपि यह नगर कृषि और मिट्टी के बर्तनों के लिए महत्वपूर्ण था, फिर भी लोथल के विपरीत, जहां समुद्री व्यापार के अच्छे संबंध थे, पश्चिम एशिया के साथ इसका कोई प्रत्यक्ष व्यापार साक्ष्य नहीं मिलता।





## कला एवं संस्कृति

10. भारत में, निम्नलिखित में से किस शहर को यूनेस्को द्वारा पहला “साहित्य का शहर” घोषित किया गया है?
- मध्य प्रदेश में जबलपुर
  - केरल में कोझीकोड
  - पश्चिम बंगाल में कोलकाता
  - महाराष्ट्र में नासिक

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- कोझीकोड, जिसे कालीकट के नाम से भी जाना जाता है, को आधिकारिक तौर पर 31 अक्टूबर, 2023 को भारत का पहला यूनेस्को ‘साहित्य का शहर’ नामित किया गया था।
- यह मान्यता यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज नेटवर्क (यूसीसीएन) के तहत दी गई थी, जिसका उद्देश्य उन शहरों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना है जो अपनी विकास योजनाओं में रचनात्मकता और सांस्कृतिक उद्योगों को प्राथमिकता देते हैं।
- कोझीकोड की समृद्ध साहित्यिक विरासत, लेखकों, कवियों और विद्वानों के जीवंत समुदाय के साथ-साथ इसके कई पुस्तकालयों और प्रकाशन गृहों ने इस सम्मान में योगदान दिया।

- शहर का पदनाम साहित्यिक संस्कृति को बढ़ावा देने और साहित्य को सतत शहरी विकास के प्रमुख घटक के रूप में बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता को स्वीकार करता है।
11. चित्रकूट मंदिर भारत के किस राज्य में स्थित है?
- छत्तीसगढ़
  - उड़ीसा
  - मध्य प्रदेश
  - उत्तर प्रदेश

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- चित्रकूट क्षेत्र उत्तर प्रदेश में भी थोड़ा फैला हुआ है, मुख्य तीर्थ स्थल और मंदिर मध्य प्रदेश में स्थित हैं।
- ऐसा माना जाता है कि यह वह स्थान है जहाँ भगवान राम, सीता और लक्ष्मण ने अपने 14 साल के वनवास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बिताया था।
- महाकाव्य रामायण के अनुसार, चित्रकूट वह स्थान है जहाँ भगवान राम के भाई भरत उनसे मिलने आए थे और उनसे अयोध्या लौटने और राज्य पर शासन करने के लिए कहा था। ऐसा माना जाता है कि हिंदू धर्म के सर्वोच्च देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) ने यहाँ अवतार लिया था।

- प्रसिद्ध रामघाट, कामदगिरि और भरत मिलाप मंदिर सहित चित्रकूट मंदिर मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित हैं।

12. झांसी के पास देवगढ़ का मंदिर और इलाहाबाद के पास गढ़वा के मंदिर में मूर्तियां किसके महत्वपूर्ण अवशेष हैं?

- (a) राष्ट्रकूट कला
- (b) गुप्त कला
- (c) मौर्य कला
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- देवगढ़ (झांसी के पास) का मंदिर और गढ़वा (इलाहाबाद के पास) के मंदिर में मूर्तियां गुप्त कला के महत्वपूर्ण अवशेष हैं।
  - गुप्त काल (लगभग चौथी से छठी शताब्दी ई.) को अक्सर भारतीय कला और संस्कृति का 'स्वर्ण युग' माना जाता है।
  - देवगढ़ मंदिर अपनी जटिल मूर्तिकला के लिए जाना जाता है, और यह गुप्त वंश की कला और शैली को प्रदर्शित करते हुए प्रारंभिक गुप्त मंदिर वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है।
  - गढ़वा मंदिर में ऐसी मूर्तियां भी हैं जो गुप्त युग की कलात्मक उपलब्धियों को दर्शाती हैं, विशेष रूप से हिंदू देवताओं और पौराणिक विषयों के चित्रण में बारीक विवरण।
- राष्ट्रकूट कला: यह काल (लगभग 8वीं से 10वीं शताब्दी ई.पू.) एलोरा गुफाओं जैसे वास्तुशिल्प कार्यों से जुड़ा है, न कि देवगढ़ या गढ़वा की मूर्तियों से।
- मौर्य कला: मौर्य राजवंश (लगभग तीसरी शताब्दी ई.पू.) अशोक स्तंभों और मौर्य मूर्तियों जैसे स्मारकीय कार्यों के लिए अधिक जाना जाता है। देवगढ़ और गढ़वा में मंदिरों के लिए गुप्त काल प्रासंगिक काल है।

## 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024

13. आजीवक संप्रदाय के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. मक्खली गोशाल इसके सबसे महत्वपूर्ण प्रणेता थे।
2. दर्शन का केंद्रीय विचार 'नियति' था, जो कि भाग्य है।
3. जाति और वर्ग के आधार पर भेदभाव।
4. आजीवकों की बैठकों के लिए नियमित सभाएँ होती थीं।

निम्नलिखित कोडों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) 2, 3 और 4 सही हैं
- (b) 1, 2 और 4 सही हैं
- (c) 1 और 4 सही हैं
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- मक्खली गोशाल को आजीविक संप्रदाय का संस्थापक और सबसे महत्वपूर्ण नेता माना जाता है।
- दर्शन का केंद्रीय विचार 'नियति' था, जो कि भाग्य है।
  - उनका मानना था कि सब कुछ पूर्व निर्धारित है और मानवीय कार्यों का कोई वास्तविक परिणाम नहीं है।
- आजीवकों की बैठकों के लिए नियमित सभाएँ होती थीं।
  - हालाँकि उनकी बैठक संरचना के बारे में विशिष्ट जानकारी सीमित है, लेकिन स्रोत संकेत देते हैं कि आजीवक भटकने वाले तपस्वियों का एक समूह था, जिससे यह सुझाव मिलता है कि उनकी संभवतः किसी प्रकार की सभाएँ या चर्चाएँ होती थीं।
- आजीवक संप्रदाय के बारे में:
  - आजीवक संप्रदाय भारत का एक प्राचीन तपस्वी समूह था जो ब्रह्मांड के एक नियतात्मक दृष्टिकोण में विश्वास करता था, जहाँ सब कुछ पूर्व निर्धारित है।
  - 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में मक्खली गोशाल द्वारा स्थापित इस संप्रदाय ने ब्राह्मणवादी धर्म के बलिदान अनुष्ठानों और उपनिषदों के अद्वैतवादी सिद्धांतों का विरोध किया।
  - उन्होंने स्वतंत्र इच्छा और कर्म की अवधारणा को भी खारिज कर दिया, यह मानते हुए कि सभी कार्य और घटनाएँ पूर्वनिर्धारित हैं।

14. राजा "प्रवरसेन" के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. वे वाकाटक वंश के वास्तविक संस्थापक थे।
2. उनका साम्राज्य उत्तर में बुंदेलखंड से लेकर दक्षिण में हैदराबाद तक फैला हुआ था।
3. उन्होंने अपने पिता राजा विन्ध्यशक्ति का स्थान लिया।
4. उनका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है?

- (a) 1 और 2 दोनों
- (b) 1 और 3 दोनों
- (c) 2, 3 और 4
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर: (d)

### व्याख्या:

- राजा प्रवरसेन को आम तौर पर वाकाटक वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उनका उल्लेख पुराणों में भी मिलता है, प्राचीन भारतीय ग्रंथ जो अक्सर शासकों के शासनकाल का वर्णन करते हैं।
- जबकि स्रोत उनके साम्राज्य की सटीक सीमा के विषय में भिन्न सुझाव देते हैं, कई खाते इसे उत्तर में बुंदेलखंड से लेकर दक्षिण में हैदराबाद तक फैला हुआ बताते हैं।
- इसके अतिरिक्त, ऐतिहासिक ग्रंथों में प्रवरसेन को उनके पिता राजा विंध्यशक्ति के उत्तराधिकारी के रूप में उल्लेख किया गया है।

### वाकाटक वंश के बारे में:

- वाकाटक वंश की नींव रखने का श्रेय विंध्यशक्ति को दिया जाता है, हालाँकि उनके बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।
- अजंता के शिलालेखों में वाकाटक वंश के संस्थापक का उल्लेख अपने समय के एक उत्कृष्ट योद्धा और राजवंश के संस्थापक के रूप में किया गया है।
- वह एकमात्र वाकाटक शासक था जिसने सम्राट की शाही उपाधि धारण की थी। उन्होंने हरितिपुत्र की उपाधि भी धारण की।
- प्रवरसेन प्रथम ने उत्तर में नाग राजा के साथ युद्ध जीतकर साम्राज्य का विस्तार किया, जिससे उत्तरी भारत के एक बड़े हिस्से पर उनका शासन फैल गया। इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में एक अन्य महत्वपूर्ण शासक रुद्रसेन प्रथम का उल्लेख है, जिसके बाद पृथ्वीसेन प्रथम ने शासन किया।
- उनके शासनकाल के दौरान वाकाटक वंश की राजधानी कंचनका थी।

15. निम्नलिखित में से किस महान शासक ने प्राचीन बिहार में “हर्यक वंश” की स्थापना की?

- (a) बिम्बिसार
- (b) बृहद्रथ
- (c) अजातशत्रु
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर: (a)

### व्याख्या:

- बिम्बिसार मगध के पहले प्रमुख शासक वंश हर्यक राजवंश (544-413 ईसा पूर्व) के संस्थापक थे।
- बिम्बिसार के बारे में:
  - उन्होंने 544 ईसा पूर्व से 492 ईसा पूर्व तक राज किया, उनकी राजधानी राजगृह (गिरिव्रज) थी।

- 15 वर्ष की आयु में उनका राज्याभिषेक कराया गया, वे सरदार भट्टिय के पुत्र थे, और उन्हें श्रेणिक या श्रेण्य के नाम से भी जाना जाता था।
- उन्होंने कोसल देवी (महा कोसल की बेटी), चेल्लना (वैशाली राजकुमारी) और क्षेमा (पंजाब के मद्रा प्रमुख की बेटी) से विवाह किया।
- उन्होंने अपने पिता की हार का बदला लेने के लिए अंग पर आक्रमण किया और उसे अपने अधिपत्य में ले लिया और गंगा के डेल्टा पर नियंत्रण स्थापित किया; गांधार के पुक्कुसति से एक दूतावास प्राप्त किया।
- वह जैन धर्म और बौद्ध धर्म दोनों के संरक्षक थे; महावीर के श्रमण में गए और बुद्ध का समर्थन किया।
- उनके बेटे अजातशत्रु (कुनिक) ने बाद में उन्हें गिरफ्तार कर लिया; जैन ग्रंथों का दावा है कि बिम्बिसार ने आत्महत्या कर ली थी, जबकि बौद्ध ग्रंथों का कहना है कि उन्हें अजातशत्रु ने मार डाला था।

- पुराणों के अनुसार, बृहद्रथ राजवंश मगध का पौराणिक पहला शासक राजवंश था। राजा बृहद्रथ द्वारा स्थापित, यह वंश पारंपरिक रूप से एक हजार से अधिक वर्षों तक शासन करने वाला माना जाता है, जो इसे मगध क्षेत्र से जुड़ा सबसे पहला राजवंश बनाता है।

16. हर्ष के समय में निम्नलिखित में से किस शासक ने असम पर शासन किया था?

- (a) अस्वद जहान
- (b) भास्कर वर्मन
- (c) राजा दाहिर
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर: (b)

### व्याख्या:

- हर्ष (हर्षवर्धन, जिन्होंने 606 से 647 ई. तक शासन किया) के समय, भास्कर वर्मन कामरूप (प्राचीन असम) के शासक थे।
  - भास्कर वर्मन हर्ष के समकालीन और सहयोगी थे।
  - चीनी यात्री जुआनजांग (ह्वेन त्सांग) ने उनके गठबंधन का अच्छी तरह से दस्तावेजीकरण किया था, जिन्होंने दोनों दरबारों का दौरा किया और उनके शासनकाल और राजनयिक संबंधों के विस्तृत वर्णन लिखे।
- राजा दाहिर ने सिंध (वर्तमान पाकिस्तान में) पर शासन किया और 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम से पराजित हुए, जो 647 ई. में हर्ष की मृत्यु के कई दशक बाद था। इसलिए, राजा दाहिर हर्ष के समकालीन नहीं थे।

17. मराठा शासन की अष्ट प्रधान प्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित का मिलान करें:

|    | अधिकारी             |    | विभाग  |
|----|---------------------|----|--------|
| A. | प्रधानमंत्री        | 1. | सचिव   |
| B. | पत्राचार के प्रभारी | 2. | पेशवा  |
| C. | वित्त मंत्री        | 3. | सामंत  |
| D. | विदेश मंत्री        | 4. | आमात्य |

सही विकल्प चुनें:

- (a) A-2, B-1, C-4, D-3  
(b) A-1, B-2, C-3, D-4  
(c) A-3, B-4, C-1, D-2  
(d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर: (a)

व्याख्या:

अष्ट प्रधान प्रणाली मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा अपने राज्य के प्रशासन में सहायता के लिए शुरू की गई आठ मंत्रियों की परिषद थी। इस प्रणाली ने विश्वसनीय अधिकारियों के बीच जिम्मेदारियों को विभाजित करके कुशल शासन सुनिश्चित किया।

| मंत्री ( शीर्षक )      | पोर्टफोलियो/ विभाग          | मुख्य उत्तरदायित्व                   |
|------------------------|-----------------------------|--------------------------------------|
| पेशवा                  | प्रधानमंत्री                | साम्राज्य का सामान्य प्रशासन         |
| अमात्य ( मजूमदार )     | वित्त मंत्री                | खाते और वित्त                        |
| सचिव ( सुरनवीस )       | मुख्य सचिव/ पत्राचार        | शाही आदेश, आधिकारिक पत्राचार         |
| मंत्री ( वाकिया-नवीस ) | आंतरिक/गृह मंत्री           | आंतरिक मामले, खुफिया जानकारी, जासूसी |
| सेनापति ( सर-ए-नौबत )  | कमांडर-इन-चीफ               | सैन्य मामले, रक्षा                   |
| सुमंत ( दबीर/ सामंत )  | विदेश मंत्री                | अन्य राज्यों के साथ संबंध, कूटनीति   |
| न्यायाधीश              | मुख्य न्यायाधीश             | न्याय, नागरिक और आपराधिक कानून       |
| पंडितराव               | उच्च पुजारी/ धार्मिक प्रमुख | धार्मिक मामले, दान, शिक्षा           |

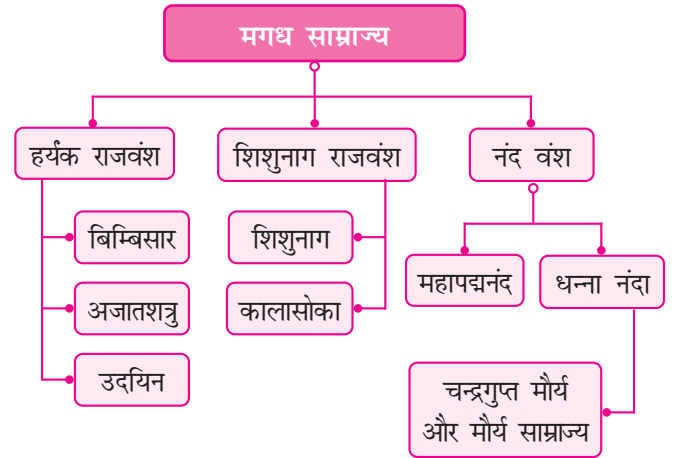
18. शिशुनाग वंश के बाद मगध (बिहार) पर किस राजवंश ने शासन किया?

- (a) मौर्य वंश  
(b) शुंग वंश  
(c) नंद वंश  
(d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- शिशुनाग वंश के बाद मगध (बिहार) पर शासन करने वाला राजवंश **नंद वंश** था।
- नंद वंश की स्थापना **महापद्म नंद** ने की थी, जिन्होंने अंतिम शिशुनाग शासक को उखाड़ फेंका और अपना खुद का राजवंश स्थापित किया।



नंद राजवंश के बारे में:

- नंद राजवंश प्राचीन भारत में एक महत्वपूर्ण शक्ति थी, जिसने लगभग 345 से 321 ईसा पूर्व तक मगध (वर्तमान बिहार) पर शासन किया था।
- महापद्म नंद द्वारा स्थापित, वे अपनी व्यापक संपत्ति, सैन्य कौशल और क्षेत्रीय विस्तार के लिए जाने जाते थे।
- इस वंश के शासनकाल की विशेषता एक सुव्यवस्थित प्रशासन और व्यवस्थित कर संग्रह था।
- अंततः, चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद राजवंश को उखाड़ फेंका, जिन्होंने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

19. “चच नामा” का फारसी में अनुवाद किसके द्वारा किया गया था।

- (a) नुरुद्दीन मुहम्मद औफी  
(b) शम्स-ए-सिराज  
(c) मुहम्मद अली बिन अबू बकर कुफी  
(d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर: (c)



### व्याख्या:

- “चच नामा”, जिसे फतेहनामा-ए-सिंध के नाम से भी जाना जाता है, एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ है जो 8वीं शताब्दी में मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध पर अरब विजय का वर्णन करता है।
  - मूल पाठ अरबी में लिखा गया था।
  - इसका फ़ारसी में अनुवाद 13वीं शताब्दी में मुहम्मद अली बिन अबू बकर कुफी द्वारा किया गया था, जो मुल्तान के तत्कालीन गवर्नर नसीरुद्दीन कुबाचा के दरबार में फारसी विद्वान थे।
  - चच नामा का महत्व:
    - यह भारत, विशेष रूप से सिंध में प्रारंभिक इस्लामी आक्रमणों के बारे में जानकारी के प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करता है।
    - यह ब्राह्मण वंश (राजा दाहिर के नेतृत्व में) के पतन और क्षेत्र में मुस्लिम शासन के उदय का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।

20. मलिक काफूर जिसे “हजार दीनारी” के नाम से भी जाना जाता है, को किसने खरीदा था?

- (a) अलाउद्दीन खिलजी
- (b) गयासुद्दीन तुगलक
- (c) नुसरत खान
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर: (c)

### व्याख्या:

- मलिक काफूर, जिसे “हजार दीनारी” (शाब्दिक रूप से, “एक हजार दीनार में से एक”) के नाम से भी जाना जाता है, मूल रूप से 1299 ई. में गुजरात के आक्रमण के दौरान पकड़ा गया एक हिंदू गुलाम था।
- उसे नुसरत खान ने 1,000 दीनार में खरीदा था, जो अलाउद्दीन खिलजी के अधीन एक सेनापति था। अपनी खरीद के बाद, नुसरत खान ने मलिक काफूर को सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के सामने पेश किया, जिसके अधीन काफूर दिल्ली सल्तनत में एक प्रमुख सेनापति बन गया।
- हालाँकि बाद में अलाउद्दीन खिलजी उसका संरक्षक और उपकारक बन गया, लेकिन यह नुसरत खान ही था जो शुरू में उसे गुजरात से दिल्ली लाया और सुल्तान से मिलवाया।

21. निम्नलिखित में से कौन चेर वंश की राजधानी थी?

- (a) कुरावुर/करूर
- (b) कांचीपुरम
- (c) मदुरै
- (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

उत्तर: (a)

### व्याख्या:

- चेर वंश की राजधानी कुरावुर/करूर थी (जिसे ऐतिहासिक ग्रंथों में वांची या करुवुर भी कहा जाता है)।
  - करूर चेरों के लिए मुख्य राजनीतिक और आर्थिक केंद्र के रूप में कार्य करता था, खासकर संगम काल के दौरान।
  - पुरातात्विक खोज, प्राचीन शिलालेख और साहित्यिक स्रोत चेर की राजधानी के रूप में करूर की स्थिति की पुष्टि करते हैं।
  - कांचीपुरम पल्लव वंश की राजधानी थी, चेरों की नहीं।
  - मदुरै पांड्य वंश की राजधानी थी।

### 69वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा, 2024

22. निम्नलिखित में से कौन-सा जानवर सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों को नहीं पता था?

- (a) बैल
- (b) घोड़ा
- (c) हाथी
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (b)

### व्याख्या:

- घोड़े का साक्ष्य मोहनजोदड़ो के सतही स्तर और लोथल से प्राप्त एक संदिग्ध टेराकोटा मूर्ति से मिलता है।
  - पश्चिम गुजरात में स्थित सुरकोटदा से घोड़े के अवशेष मिले हैं, और यह लगभग 2000 ईसा पूर्व का है, लेकिन इसकी पहचान संदिग्ध है।
  - किसी भी मामले में, हड़प्पा संस्कृति घोड़ा-केंद्रित नहीं थी। प्रारंभिक और परिपक्व हड़प्पा संस्कृतियों में न तो घोड़े की हड्डियाँ और न ही उसके चित्रण का पता लगाया गया है।
23. भारतीय कला में ‘स्तूप’, ‘चैत्य’ और ‘विहार’ का निर्माण निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है?

- (a) आजीविक सम्प्रदाय
- (b) वैष्णव सम्प्रदाय
- (c) बौद्ध धर्म
- (d) शैव सम्प्रदाय

उत्तर: (c)

### व्याख्या:

- स्तूपों को बौद्धों ने लोकप्रिय बनाया।
- बुद्ध की मृत्यु के बाद नौ स्तूप बनाए गए। उनमें से आठ में बुद्ध के अवशेष उनकी मेथी में रखे गए थे, जबकि नौवें में वह बर्तन था जिसमें मूल रूप से अवशेष रखे गए थे।
- मौर्य काल में भी शैल गुफाओं का निर्माण जारी रहा। हालाँकि, इस अवधि में दो प्रकार की शैल गुफाओं का विकास हुआ—चैत्य और विहार।

- विहार बौद्ध और जैन भिक्षुओं के लिए आवासीय हॉल थे और मौर्य साम्राज्य के समय में विकसित किए गए थे।
- वे मुख्य रूप से सपाट छत वाले चतुर्भुज कक्ष थे और प्रार्थना कक्ष के रूप में उपयोग किए जाते थे।
- गुफाओं में बारिश से बचाने के लिए खुले आंगन और पत्थर की दीवारें भी थीं। उन्हें मानव और पशु आकृतियों से भी सजाया गया था। उदाहरण: कार्ले चैत्य हॉल, अजंता गुफाएँ (29 गुफाएँ - 25 विहार + 4 चैत्य), आदि।

**24. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

भारत में बाबर के आगमन के कारण

1. उपमहाद्वीप में बारूद का आगमन हुआ
2. क्षेत्र की वास्तुकला में मेहराब और गुंबद का परिचय हुआ
3. प्रदेश में तैमुरिड राजवंश की स्थापना हुई
4. युद्ध में तोपों की शुरुआत हुई

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2                      (b) 1, 2 और 3  
(c) 3 और 4                              (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

**उत्तर: (c)**

**व्याख्या:**

- बाबर ने भारत में तैमूरी वंश की स्थापना की। बाबर तैमूरी वंश या तुर्को-मंगोल वंश का वंशज था, जो युद्ध नायक तैमूर का वंशज था और उसने इस क्षेत्र में तैमूरी साम्राज्य की नींव रखी।
- बाबर ने भारत में युद्ध की एक नई पद्धति को पेश किया। हालांकि भारत में पहले से ही बारूद का ज्ञान था, लेकिन बाबर ने तोपखाने और घुड़सवार सेना के कुशल संयोजन से जो विजय हासिल की, उसने बारूद और तोपखाने के तेजी से लोकप्रिय होने में योगदान दिया।
- प्रथम पानीपत के युद्ध (1526) में बाबर को भारत में तोपों को पेश करने का श्रेय दिया जाता है।
- दिल्ली सल्तनत के दौरान एक उच्च गुणवत्ता वाली तोप के आगमन से तुर्कों को मेहराब और गुंबद पर आधारित शानदार भवनों का निर्माण करने में मदद मिली।

**25. निम्नलिखित में से किस बंदरगाह को मुगल-काल के दौरान बाबुल मक्का (मक्का का द्वार) कहा जाता था?**

- (a) कालीकट                              (b) सूरत  
(c) केम्बे                                      (d) ब्रोच

**उत्तर: (b)**

**व्याख्या:**

- मुगल काल में सूरत को “बाब-उल-मक्का” कहा जाता था क्योंकि यह हज यात्रा के लिए प्रस्थान बिंदु था।

- मुगल शासन के दौरान सूरत की जनसंख्या, क्षेत्र, व्यापारिक संबंधों और समृद्धि में तेजी से वृद्धि हुई।
- यह पश्चिमी भारत का मुख्य अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह बन गया, और मक्का जाने वाले जहाजों का प्रस्थान बिंदु था।
- आज इस स्थान को “मक्काई पुल” के नाम से जाना जाता है।
- अंग्रेजों ने 1613 ईस्वी में सूरत में अपना पहला केंद्रीय कार्यालय स्थापित किया। इसके बाद डच, फ्रांसीसी और अर्मेनियाई भी यहाँ आए, जिनकी कब्रें आज कतारगाम गेट के पास स्थित हैं।
- 1644 में हज यात्रा करने वाले मुसलमानों की सुविधा के लिए एक भव्य सराय बनाई गई, जिसका उपयोग अब सूरत के मुख्य कार्यालय के रूप में किया जाता है।

**26. ‘अष्टप्रधान’ मन्त्रिपरिषद् थी**

- (a) गुप्त प्रशासन में                      (b) चोल प्रशासन में  
(c) मराठा प्रशासन में                      (d) विजयनगर प्रशासन में

**उत्तर: (c)**

**व्याख्या:**

- शिवाजी के प्रशासन में आठ मंत्रियों या सलाहकारों का समूह “अष्टप्रधान” कहलाता था।
- उन्होंने एक ठोस प्रशासनिक व्यवस्था की नींव रखी, जो अधिकांशतः दक्कणी राज्यों की प्रशासनिक प्रथाओं पर आधारित थी।
- इन आठ मंत्रियों में से प्रत्येक राजा के प्रति सीधे उत्तरदायी होता था।
- सबसे महत्वपूर्ण मंत्री “पेशवा” थे, जो वित्त और सामान्य प्रशासन का कार्य देखते थे।
- “सर-ए-नौबत” (सेनापति) का पद सम्मानजनक होता था और आमतौर पर यह पद किसी प्रमुख मराठा सरदार को दिया जाता था।
- “मजूमदार” लेखांकन कार्य संभालते थे, जबकि “वाकियानवीस” को खुफिया, डाक और गृह कार्य का जिम्मा सौंपा गया था।
- “सुरुनवीस” या “चिटनीस” राजा के पत्राचार में सहायता करते थे।
- “दबीर” दरबार के प्रमुख थे और विदेशी शक्तियों के साथ संबंधों में राजा की मदद करते थे।
- “न्यायाधीश” और “पंडितराव” न्याय एवं धर्मार्थ कार्यों का प्रभार संभालते थे।

**27. ‘बोधिसत्त्व पद्मपाणि’ की पेंटिंग स्थित है**

- (a) बाग में                                      (b) एलोरा में  
(c) अजंता में                                      (d) बादामी में

**उत्तर: (c)**

### व्याख्या:

अजंता की गुफा संख्या 1 में बोधिसत्व पद्मपाणि का एक भित्ति चित्र है।

- अजंता की अन्य महत्वपूर्ण चित्रकलाओं में बुद्ध के पूर्व जन्मों के जातक कथाओं से जुड़े दृश्य और गौतम बुद्ध के जीवन की घटनाओं का चित्रण शामिल है।
- गुफा संख्या 1 में त्रिभंग मुद्रा में विभिन्न बोधिसत्वों के चित्र हैं, जैसे:
  - वज्रपाणि (बुद्ध की शक्ति के प्रतीक और रक्षक)
  - मंजुश्री (बुद्ध की ज्ञान का प्रतीक)
  - पद्मपाणि (अवलोकितेश्वर) (बुद्ध की करुणा के प्रतीक)
- गुफा संख्या 16 में “द डाइंग प्रिंसेस” का चित्रण भी देखा जा सकता है।
- शिबि जातक का दृश्य जिसमें राजा शिबि ने कबूतर को बचाने के लिए अपने शरीर का मांस तक दान किया।
- मातृ-पोषक जातक का एक दृश्य भी है, जिसमें एक हाथी द्वारा बचाए गए एक व्यक्ति ने अपने रक्षक की जानकारी राजा को दी।

### 28. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- फाहियान एक चीनी तीर्थयात्री था, जो हर्ष के शासनकाल के दौरान भारत आया था।
- ह्वेनसांग एक चीनी बौद्ध भिक्षु थे, जिन्होंने चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया था। उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1  
(b) केवल 2  
(c) 1 और 2 दोनों  
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (d)

### व्याख्या:

कथन 1 और 2 गलत हैं।

- चीन के यात्री फाहियान ने चंद्रगुप्त के शासनकाल के दौरान (ई. 399-414) भारत का दौरा किया और यहां के लोगों के जीवन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया।
- राजा हर्ष का शासनकाल इसलिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इसी दौरान चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भारत का दौरा किया।
- ह्वेनसांग ने चीन से ई. 629 में यात्रा प्रारंभ की और भारत में एक लंबे समय तक ठहरने के बाद ई. 645 में वापस चीन लौटे।
- वह बिहार के नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन करने और भारत से बौद्ध ग्रंथों का संग्रह करने के उद्देश्य से आए थे।

### 29. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

| सूची-I |             | सूची-II |          |
|--------|-------------|---------|----------|
| a.     | चरक         | 1.      | गणित     |
| b.     | ब्रह्मगुप्त | 2.      | चिकित्सा |
| c.     | वराहमिहिर   | 3.      | नाटककार  |
| d.     | विशाखदत्त   | 4.      | ज्योतिष  |

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) a b c d                      (b) a b c d  
2 1 4 3                      1 2 3 4  
(c) a b c d                      (d) a b c d  
3 2 4 1                      1 4 3 2

उत्तर: (a)

### व्याख्या:

- चरक संहिता (आयुर्वेद पर आधारित ग्रंथ) चरक द्वारा लिखा गया है। इसे आयुर्वेद का प्रमुख स्रोत माना जाता है और इसमें औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों के उपयोग का वर्णन किया गया है।
- ब्रह्मगुप्त (7वीं शताब्दी), ब्रह्मस्फुट सिद्धांत नामक ग्रंथ में शून्य को एक संख्या के रूप में दर्शाया गया।
  - इसमें ऋणात्मक संख्याओं को ‘कर्ज’ और धनात्मक संख्याओं को ‘सम्पत्ति’ के रूप में समझाया गया है।
  - इसमें पहली बार द्विघातीय समीकरण का स्पष्ट विवरण भी मिलता है।

### वराहमिहिर:

- पंचसिद्धांतिक:** खगोलशास्त्र पर आधारित ग्रंथ।
- बृहत् संहिता:** इस ग्रंथ में ग्रहों की गति, भूविज्ञान, वास्तुकला आदि अनेक विषयों का विवरण दिया गया है।

### विशाखदत्त:

- मुद्राराक्षस:** यह एक राजनीतिक नाटक है जिसमें चंद्रगुप्त मौर्य के सत्ता में आने की कथा है।
  - देवीचंद्रगुप्तम्:** विशाखदत्त का एक अन्य महत्वपूर्ण नाटक।
30. इनमें से किसने भारत में फारसी त्योहार नौरोज की शुरुआत की?
- (a) फिरोज शाह तुगलक      (b) अलाउद्दीन खिलजी  
(c) बलबन                      (d) इल्तुतमिश

उत्तर: (c)

### व्याख्या:

- बलबन ने अपने दरबार में कई ईरानी परंपराओं की शुरुआत की, जिनमें नौरोज भी शामिल था।
- नौरोज नववर्ष नई शुरुआत और समृद्धि की कामना का समय होता है।



